IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राजेन्द्र यादव की कहानियों में नारी

डॉ. व्ही. आई. शेख
हिन्दी विभागाध्यक्ष
किटेल कला महाविद्यालय, धारवाड–१ (कर्नाटक)

राजेन्द्र यादवजी का जन्म आगरा में २८ अगस्त १९२९ में हुआ। इनका संयुक्त परिवार था। ये पढ़ाई में आगे थे। १९४९ में बी.ए और १९५१ में आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. किया। यादवजी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न निर्भीक साहित्यकार थे। इंग्लिश, बंगाली, उर्दू भाषा पर इनका अधिकार था। ये कहानीकार, उपन्यास्कार, कवि, अनुवादक, संपादक, समीक्षक, प्रकाशक, संस्मरण्कार थे। नई कहानी में इनका बडा योगदान रहा है। राजेद्र यादव जी शुरु से ही मस्त मौला सभाव के थे। बचपन में एक अकस्मिक घटना (हाकी खेलते हुए) के कारण उनका पैर टूट गया इस कारण वे जीवन भर अपाहिज बन गए बैसाखी का सहारा लिया लेकिन उनका हौसला न टूटा वे आगे बढ़ते गए और हिन्दी कथा साहित्य में अपनी अलग ही पहचान उन्होंने छोड दी। पिता की प्रेरणा उन्हें ज्यादा मिली। पिता आदि के कारण बचपन से ही कथा कहानियों के संस्कार उन के मन पर पडे थे। सत्येन्द्र यादव जी कहते हैं "राजेन्द्र भाई साहब के असली कथा गुरु तो भिखारीलाल नाम का चाटवाला था।" किशोरावस्ता में ही इन्होंने अपनी पहली कहानी 'प्रतिहिंसा' लिखी थी। उनकी पहली उल्लेखनीय रचना 'खेल खिलौने' है। २१ साल की उम्र में ही इन्होंने अपना पहला उपन्यास 'प्रेत बोलते हैं' लिखा था। बाद में कुछ परिवर्तन के साथ 'सारा आकाश' नाम से यह उपन्यास प्रकाशित हुआ जिस पर बासु चाटर्जी ने फिल्म भी तैयार की थी। 'आवाज तेरी है' इनका कविता संग्रह १९६० में छपा था। पत्नी मन्नू भंडारी के साथ मिलकर 'एक इंच मुसकान' उपन्यास लिखा। यादवजी ने देशी विदशी साहित्य का अध्ययन किया।

यादवजी मर्क्सवाद से प्रभावित थे। कम्युनिस्टों का भी इन पर प्रभाव था जो उनकी रचनाओं में यत्र, तत्र दिखाई देता है। यशपाल, प्रेमचन्द, रांगेय राघव एवं एंटन चेकोव की कहानियों से वे बहुत ही प्रभावित थे। १९४७ से पहले ही उनका लेखन कार्य आरंभ हुआ १९५० में 'रेखाएँ, लहरें और परछाइयाँ' नामक कहानी संग्रह छपा। आरंभ में तीन सामाजिक उपन्यास भी लिखे। देवताओं की मूर्तीयाँ, जहाँ लक्ष्मी कैद है, अभिमन्यु की आत्महत्या, छोटे छोटे ताजमहल, टूटन, चौखटे तोड़ते त्रिकोण, श्रेष्ठ कहानियाँ, प्रतिनिधि कहानियाँ आदि प्रकाशित हैं। उनकी कहानियों में महानगरीय संवेदनाएँ यथार्थता से उभरकर आई हैं। उनकी टूटन, एक कमजोर लड़की की कहानी, जहाँ लक्ष्मी कैद है, शहर की यह रात आदि कहानियों में नगर बोध का चित्रण है।

राजेन्द्र यादव जी ने नारी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित करने के लिए कई कहानियों को लिखा है। नारी सम्बन्धी कहानियों में प्रेम सम्बंध, शोषण, मनोवैज्ञानिक समस्या, नारी पर बन्धन, अर्थिकता, नर नारी सम्बंध, अकेलापन, गरीबी, आदि विषयों पर प्रकाश डाला है। नारी को खिलौना मान कर उसके व्यक्तित्व का विचार न करके उससे विवाह करने का आग्रह 'खेल–खिलौने' कहानी में नलिनी के पति में दिखाई देती है। 'खानदानी' कहानी में नायिका पैरों की जूती होकर रहने की यातना से मुक्त होने के लिए घर से भाग खडी होती है। भारतीय संस्कृति में विवाह पूर्व प्रेम के लिए कम मान्यता है। धन, धर्म, जात पात, सामाजिक स्तर आदि के कारण प्रेमियों का प्रेम असफल हो जाता है। यादव जी की ऐसी अनेक कहानियाँ हैं। 'अंगारों का खेल' की हेमा पिता के खानदान का विचार करने की जिद के कारण अपने से कहीं अधिक आयु के व्यक्ति के साथ रो–धोकर बंधने को विवश है। 'पास–फेल' की वीना जातिभेद

के कारण अपने प्रेमी से जबरदस्ती अलग कर दी जाती है । 'निरजना' कहानी की निरजना विद्रोह कर अपनी सगाई की उपेक्षा करके अपने प्रेमी के पास पहुँच जाती है । 'भविष्य के आस पास मंडराता अतीत' का पति पत्नी के साथ समझौता करते करते विवाह सम्बन्ध तोड लेने के लिए विवश है । तीन पत्र और अलीपन' की पत्नी को कुछ कहने का अधिकार नहीं है । 'लौटते हुए' कहानी की मृदुला दहेज का रूपया न लाने से पति द्वारा छोड दी जाती है ।

विवाहित जीवन में पराये पुरुष और परायी स्त्री के सम्बन्धों के कारण उत्पन्न होनेवाली समस्याओं का चित्रण भी कुछ कहानियों में हुआ है । 'किनारे से किनारे तक' कहानी का माणिक अपने बेटे और कांत के बेटे में गजब की समानता देखकर उद्विग्न हो उठता है । एक कमजोर लड़की की कहानी में लोकेश अपनी पत्नी सविता और प्रमोद के सम्बन्ध को मानकर मानसिक रूप से परेशान होता है । 'पहली कविता' के प्रमोद की पत्नी अकारण ही प्रमोद की दोस्त अजंली से द्वेष किए हुए है । सामाजिक समस्याओं के साथ साथ मनोवैज्ञानिक चित्रण भी इनकी कहानियों में हैं । इनकी 'जहाँ लक्ष्मी कैद है' कहानी की लक्ष्मी पिता द्वारा विवाह न होने के कारण क्षोभोन्माद का शिकार बनती है, 'प्रतीक्षा' में काम्य–प्रेम की अतृप्ति और असफलता ने गीता के व्यक्तित्व को दो टुकडों में बाँट दिया है । इस तरह स्त्री के विविध रूप यादव जी की कहानीयों में उभरकर आए हैं ।

विशेषकर राजेन्द्र यादवजी ने नारी की कई समस्याओं को अपनी कहानियों में स्थान दिया है । जैसे मनोवैज्ञानिक समस्या, सामाजिक समस्या आदि :–

'जहाँ लक्ष्मी कैद है' कहानी में धार्मिक, नैतिक, आर्थिक और सामाजिक बन्धनों को तोडकर यौन की प्रबल आकांक्षा का प्रवाह दिखलाया गया है और प्राचीन रूढियों एवं अंधविश्वासों में नाटकीय जीवन भोगने के लिए आभिशप्त लक्ष्मी की करुण व्यथा को उभारा गया है । जिसकी नायिका अतृप्त इच्छाओं के कारण हिस्टीरिया की रोगी बन जाती है । कुंठित मनोवृत्ति का चित्रण एवं लडकी के सन्दर्भ में रुढ़ धारणाओं के खिलाफ विद्रोह दिखया गया है । इसके अलावा 'खुले पंख टूटे डैन' की मीनल ऐसी ही कुंठित पात्र है । 'खुले पंख टुटे डैन' की मीनल अपनी जिदंगी में प्रेम की तलाश में भटकती है उसके जीवन में तीन पुरुष आने पर भी वह किसीको स्वीकार नहीं कर पाती । इच्छाओं की पूर्ति न होने से वह कुंठित हो जाती है। तथा हीनता ग्रंथी का शिकार हो जाती है । प्रतीक्षा कहानी में गीता और नन्दन में समलैंगिकता की झलक दिखाई देती है । गीता अकेलेपन से त्रस्त रहती है हर्ष की गैरहाजिरी में नन्दन भी अकेलापन महसूस करती है ऐसे क्षणों में उनका व्यवहार विकृत सा हो जाता है नन्दन तो ऐसी पागल हो जाती है कि नाचने– काटने को दौडती है । इरोटिक क्षणों में गीता को नन्दन के शरीर से अत्यन्त मोह होता है ऐसे इरोटिक वर्णन समलैंगिकता के चित्र हिन्दी कथा साहित्य में कम है । बाद में दोनों स्त्री पात्र अपने गलत व्यवहार के लिए पाप बोध एवं ग्लानि का अनुभव करती है ।

टूटना कहानी में लीना तथा किशोर विवाहित होकर भी वर्ग वैषम्य के शिकार बनते हैं । लीना के अभीजात संस्कारों के चलते किशोर स्वयं को हीन महसूस करता है लीना इनकम टैक्स के असिस्टेंट कमिशनर की बेटी थी, वहीं दूसरी ओर किशोर ८० रुपये मासिक वेतन पाने वाले भाई के साथ रहा है, गरीबी को उसने करीब से देखा है । लीना के कहने पर वह कहता है हाँ हाँ मैं जाहिल हूँ बेवकूफ हूँ लाट साहब की बच्ची कहती है ।

पति–पत्नी के बीच वर्ग वैषम्य की मानसीकता होने के साथ–साथ मानसिक स्तर पर ही ग्रन्थि और उच्च ग्रन्थिवाली विषमता भी है । यहाँ पर लीना किशोर से विवाह करती है डैवोर्स देना चाहती है और फिर सुलह करना चाहती है उसकी विभिन्न मनस्थिति का चित्रण यहाँ हुआ है । मानसिक स्थिति के अलाव यादवजी ने स्त्रीयों से जुडे सामाजिक विभिन्न पहलूओं पर भी दृष्टि डाली है आर्थिक शोषण अन्धविश्वास, बेकारी, जातिभेद, वेश्याजीवन, विधवा विवाह आदि विषयों पर अपनी कहानियों में विचार किया है ।

'जहाँ लक्ष्मी कैद है' में नया शोषण रूप है जो परंपरा से हठकर है यहाँ सास नहीं बल्कि स्वयं पिता लाला रुपाराम ही यातनाएँ देता है । अन्धविश्वास के कारण लडकी का विवाह नहीं कराता अन्धविश्वास यह था कि कन्या

के विवाह के बाद वह धनवान से गरीब बन जाएगा, वहां बेटी प्रमुख नहीं है प्रमुख है 'धन' । इस कारण वह लक्ष्मी को घर में ही कैद कर देता है । जिसके कारण लक्ष्मी को दौरे पड़ने लगते हैं । यह अभागन लक्ष्मी थी जिसे 'लक्ष्मी' के (पैसा) कारण ही घर की चार दीवारी में कैद होना पडा अर्थ लोभी पिता पुत्री की मानवीय आकांक्षाओं का गला घोटकर उसे कैदी जीवन जीने के लिए विवश कर देता है । इसका परिणाम ये होता है कि दौरा पड़ने पर लक्ष्मी उछलती कूदती और बुरी तरह गालियाँ देती है । बेमतलब रोती है, हँसती है चीजे फेंकती है, मारपीट करती है और कपडे उतार फेंकती है । इस मनस्थिति के कारण लक्ष्मी अंदर से खोखली हो जाती है टूटती है जो बेचारी लक्ष्मी की करूण कहानी है ।

'साइकिल' कहानी में थदानी आनन्द का मित्र है हमेशा उपहार वगैरहा लाता है अहसान करता है और उसकी पत्नी को भाभी कहता है, कामुक दृष्टि रखता है । जिससे रश्मि जो घरेलू औरत है उसे ये सब अच्छा नहीं लगता लेकिन पति आनन्द ये समझ नहीं पा रहा है उसे मित्र थदानी का कहा ब्रह्मवाक्य है उसे पैसा चाहिए, एक दिन थदानी रश्मि को देने केलिए हीरा तक लाता है । रश्मि गुस्से में हाथ की कंघी तोड देती है, बेचारी वह किस पर गुस्सा प्रकट करे? जबकि रश्मि पति और तधानी के इस व्यवहार से अन्दर ही अन्दर घूट रही है पति का हर कहा उसे मानना पड रहा है वह सोचती है नारी रूपी साइकिल पर सवार होकर आज का पुरुष अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करने में कोई कोताही नहीं करता जब रश्मि की बर्दाश्त की हद पूर्ण होती है तेा वह कहती है ट्ट मुझे आप लोगों की पिकनिक–विकनिक में कहीं नहीं जाना । आपको जहाँ जाना हो पिकनिक, सभा सोसायटी यहाँ शौक से जाइए मैं दोनें हाथ जोडती हूँ मुझे माफ करो । वह रोजमर्रा के शौक से ऊब गई थी । जब साइकिल की बात से हटाकट बचने के लिए रश्मि ड्रैविंग का जिक्र करती है वहाँ थदानी आ जाता है उसकी कार भी थी, वह ऐसा स्त्री लंपट इनसान है जो रश्मि को हासिल करने के लिए आनन्द को हर सुविधा देने के लिए तैयार है। इस कहानी में रश्मि की सोच, आजादी पर निर्बन्ध लगाएं गए हैं उसे अबला बनाया गया है । इसलिए उसे साइकिल का पिछला पहिया कहा गया, उसे न चाहते हुए भी अगले पहिये (पति) के पीछ घसीटना पडता है । यहाँ पर हम तीसरे व्यक्ति के कारण परिवर की शांति भंग होने का चित्रण भी देखते हैं जिसके कारण परिवारों में बिखराव एवं अलगाव जन्म लेता है ।

प्रतीक्षा कहानी में सौतेली माँ के अत्याचार दर्शाए गए हैं । सौतेली माँ के अत्याचार से परेशान होकर नन्दन चाची के घर जाती है लेकिन उसे वहाँ भी सुख नहीं मिलता वह घर से भाग जाती है ।

निष्कर्ष : उन्होंने समाज में घटित नारी जीवन के अत्याचारों को, यौन सम्बन्धों को, अन्धविश्वासों को, दाम्पत्य जीवन में आने वाली समस्याओं को बखूबी चित्रित किया है । इस तरह प्रस्तुत कहानियों में राजेन्द्र यादव जी ने नारी के विविध रूपों को जैसे स्वयं को किसी भी परिस्थितियों में स्थित रखकर हर हाल का सामना करने वाली, दाम्पत्य जीवन के विखराव को समेटने वाली, जीवन के पथ पर चलते अर्थलोलूप पथ भ्रष्ट पति को सवारने वाली आज की आधुनिक नारी के उदात्त रूपों को उभारा है । तथा जीवन में आये अनेक संकटों के गूँज–अनुगूंजों को नजर अन्दाज करने वाली का चित्रण किया है । नई कहानी के कर्णधार राजेन्द्र यादव जी ने अपनी कहानियों में स्त्री पक्ष के अनेक पहलूओं को उभारा है वे श्रेष्ठ कथाकार थे । इनकी मृत्यु २९ सितंबर २०१३ में हुई । कई कठिनाइयों को पार कर उनका कथाकार जग की साहित्यिक रेस में आगे निकल गया ।